RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

मेगास्थनीज के लेखन में पटना का नगरीय प्रशासन: एक मूल्यांकन

नीरज कुमार

पी.एच.डी. शोधार्थी (इतिहास विभाग, पटना विश्वविद्यालय)

महाजनपद के उदय के बाद तेजी से नगरों का उदय होने लगा था। छठी शताब्दी ई.पू. के बाद जिन नगरों ने भारतीय इतिहास में अपना एक अलग प्रभाव छोड़ा है उसमें पटना को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। दीर्घनिकाय के **महापरिब्बानसुत्त, महावंश, पुराण,** में भी पाटलिपुत्र का वर्णन मिलता है। जहाँ तक इसके प्रशासन की बात कि जाए तो साहित्यिक रूपसे मेगास्थनीज की इंडिका के अंश जो विभिन्न ग्रीक विद्वानों द्वारा संकलित किए गए है। कोटिल्य के अर्थशास्त्र में नगर प्रशासन का वर्णन है जो कई मायने में इंडिका से समानता भी रखता है और असमानता। वहीं वर्तमान पटना के आस-पास से मिले साक्ष्यों से भी मेगास्थनीज के नगरीय प्रशासन की सूक्ष्म जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

ग्रीको रोमन स्त्रोत के अनुसार पाटलिपुत्र एक चारदीवारी से घिरा हुआ किलेबंद शहर था। अपने समय काल में यह सबसे सुरक्षित शहर था। यहीं कारण है कि उदयन ने अपनी राजधानी राजगृह से पाटलिपुत्र स्थापित कर दिया था। मेगास्थनीज के अनुसार शहर की लंबाई 80 स्टेडिया और चोड़ाई 15 स्टेडिया थी। इसके चारों ओर 570 बुर्ज बने हुए थे। इस शहर का आकार चर्तुभुजाकार था।[प] मेगास्थनीज के अनुसार राजभवन शहर के बीचो-बीच अवस्थित था और सुंदर उद्यानों से घिरा हुआ था। राजभवन के चारों ओर छायादार पेड़ों की कतारें थी। इनमें से कुछ स्वदेशी थे वहीं कुछ विदेशों से मगाएँ गए थे।[पप]

जहाँ तक प्रशासन का सवाल है तो मेगास्थनीज के अनुसार नगर का प्रशासन 6 समितियों के द्वारा चलाया जाता था जिसके प्रत्येक समिति में 5 सदस्य होते थे।[पपप] पहली समिति औद्योगिक पर्यवेक्षण से जुड़ी हुई थी। राजधानी में, वस्त्र, उद्योग, आभूषण उद्योग, शस्त्र निर्माण उद्योग का पर्यवेक्षण इसी समिति के अन्तर्गत आती थी। इन कार्यों के अधीक्षण से जुड़े अधिकारी **सूत्राध्यक्ष, सौवर्णिक** जैसे अधिकारी अपने-अपने कार्यों का संपादन करते थे। विभिन्न उद्योग का प्रभारी का नामाकरण कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित है जो मेगास्थनीज के बातों को प्रमाणित करता है।

मेगास्थनीज के अनुसार दूसरी समिति विदेशियों के देख रेख से जुड़ी हुई थी। दूसरे तरफ विदेशियों के लिए आवास की व्यवस्था करना, सुरक्षा उपलब्ध करवाना, चिकित्सा सेवा उपलब्ध करवाना समिति के कार्य थे। माना जाए तो यह विदेशियों के कल्याण से समर्पित थी। यह विदेशियों की गतिविधियों पर भी नजर रखती थी की कही ये दूसरे राज्य के गुप्तचर तो नहीं है। अगर विदेशी यात्री की मृत्यु हो जाती थी तो उन्हें दफनाने के कार्य के साथ-साथ उनकी संपत्ति को उनके देश वापस भिजवा दिया जाता था।

पाटलिपुत्र की तीसरी समिति जन्म, मृत्यु का हिसाब रखती थी। मेगास्थनीज का मानना था कि जन्म मृत्यु के हिसाब का मूल: कारण लोगों के बारे में जानकारी प्राप्त करना था ताकि अगर महामारी से मृत्यु हो रही है तो उसे समय रहते ही रोक लगाया जा सके। कौटिल्य की **अर्थशास्त्र** से अगर तुलना करते है तो **स्थानिक** और **गोप** जैसे शहरी अधिकारी इस कार्य से जुड़े हुए थे। नगर के भीतर चार स्थानिक होते थे और एक स्थानिक के तहत 5 गोप होते थे। **गोप** मुख्यत: जनगणना का प्रभारी अधिकारी था। यह अधिकारी कर देने वाले, कर न देने वाले, वर्ण लिंग का ख्याल रखते थे। कौटिल्य के पाटलिपुत्र की जनसंख्या 4 लाख बताई गई है। शायद इन्हीं अधिकारियों के जनगणना को आधार बनाया गया होगा।[पअ]

चौथी समिति व्यापार और वाणिज्य का देखरेख करती थी। व्यापार संबंधी नियमों का देखरेख करना इनका प्रमुख कार्य था। यह समिति यह ध्यान रखती थी कि व्यापारी, नियमों के अनुसार अपने कार्यों का संपादन करती है। माप तोल की जाँच, वस्तु विक्रय व्यवस्था तथा यह देखना होता था कि व्यापारी एक से अधिक वस्तु का विक्रय न करे। अगर कोई व्यापारी दुगना वस्तु बेचना चाहता था तो उसे दुगना कर अदा करना पड़ता था। वे

RRIJM 2015, All Rights Reserved

किसी भी व्यक्ति के एक से अधिक तरह के व्यापारिक कार्यों की जानकारी रखते थे। इनका काम माँग पूर्ति बिक्री और मूल्य का निर्धारण था। ये समिति मूल्य निर्धारण से जुड़ी हुई थी। जो व्यापारी मूल्य से ज्यादा दामों पर समान को बेचते थे उसके लिए कड़े दंड का प्रावधान था। मेगास्थनीज का मानना था कि समान में मिलावट दंडनीय अपराध था। कौटिल्य के अधिकारी के कार्य इससे साम्यता रखते थे। **सुराध्यक्ष,** शराब और मांस की ब्रिक्री से जुड़ा हुआ था। **पौतवाध्यक्ष** बाँट का निरीक्षण करता था। निरिक्षण के लिए कुछ मूल्य व्यापारियों को चुकाना होता था। अर्थशास्त्र में यह उल्लेख है कि इसके लिए प्रतिदन 1 कांकिणी कर लगाया गया था ताकि इस अधिकारियों के वेतन देने में राज्य को आर्थिक मदद मिले।

पाँचवी समिति का काम बचे हुए सामानों का निरीक्षण तथा नये और पुराने सयानों का विभेद करना था। यह कार्य **पण्याध्यक्ष** द्वारा सम्पादित होता था। नये और पुराने सामानों के बीच विभेद का काम कौटिल्य द्वारा वर्णित **शुल्काध्यक्ष** के द्वारा किया जाता था।[अ] यह समिति ध्यान रखती थी कि व्यापारी नई और पुरानी वस्तुओं को अलग-अलग रखते हैं और अलग-अलग बेचते है कि नहीं? मौर्यकाल में नई और पुरानी वस्तुओं के मूल्य अलग-अलग होते थे। अगर नई ओर पुरानी वस्तुओं को मिलाकर बेचने की जानकारी मिलती थी तो यह निकाय प्रशासन को यह सूचना देता था। अपराध सिद्ध होने पर व्यापारियों को दंडित किया जाता था। इस समिति के तत्परता के कारण नई और पुरानी वस्तुओं में विभेद कड़े रूप से लागू किया जाता था।

छठी समिति का कार्य ब्रिकी कर से जुड़ा हुआ था। इस समिति का कार्य कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित शुल्काध्यक्ष द्वारा संकलित किया जाता था। कर विक्रयमूल्य का $1/10$ भाग होता था। कर चोरी करने वालों को मृत्युदंड का प्रावधान था।

छठी समिति के कार्य की तुलना अगर कौटिल्य के द्वारा अर्थशास्त्र में उल्लेखित पदाधिकारियों से करते हैं तो समानता देखने को मिलती है। 27 अध्यक्षों की चर्चा जो कौटिल्य द्वारा की गई है **पण्याध्यक्ष, लक्षणाध्यक्ष, लवणाध्यक्ष** जैसे अधिकारियों के कार्य इस समिति के कार्य से मेल रखते है।

कौटिल्य के अनुसार नगरों का प्रशासन नगर पालिका द्वारा चलाया जाता था जिसका प्रमुख **'नागरक'** या **'पुरमुख्य'** कहा जाता था।[अप] मेगास्थनीज **एरिस्टोनोमोई** नामक अधिकारियों के बारे में चर्चा करता है जिसका प्रमुख कार्य नगरों के प्रशासन से जुड़ा हुआ था। ऐरिस्टोनोमोई के निदेशानुसार 6 समिति अपने कार्यों का संपादन करती थी।

कौटिल्य के अन्तर्गत नगर प्रशासन का वर्णन एक अलग-अध्याय में किया गया है। नागरक शहर का नगर प्रभारी हुआ करता था। वह राजधानी में होने वाले क्रियाकलापों का देखरेख करता था।[अपप] **नागरिक, पण्याध्यक्ष, सुराध्यक्ष, गणिकाध्यक्ष, दयुत्ध्यक्ष शुल्काध्यक्ष गोप** और **स्थानिक** नगर प्रशासन से जुड़े हुए थे। **पण्याध्यक्ष** शहरी बाजारों का अध्यक्ष होता था। इसका कार्य माप तौल से जुड़ा हुआ था। इसका यह भी कार्य था कि भोज्य पदार्थों से किसी तरह की मिलावट आदि न हो सके। दोषी व्यापारी को कानून के आधार पर दंड दिया जाता था।

सुराध्यक्ष शराब से संबंधित अधिकारी था जिसका कार्य यह देखना होता था कि मदिरा की बिक्री राज्य के कानून के अनुसार हो रही है या नहीं। इसके तहत दंड स्वरूप एक बड़ी राशि जमा करनी होती थी। **शुल्काध्यक्ष** मार्ग कर वसूल करते थे। **शुल्काध्यक्ष** ब्रिकी कर से भी जुड़े थे। **द्युताध्यक्ष** जुआ नियंत्रक के काम से जुड़े थे। जुआ के अन्तर्गत धोखाधड़ी रोकने के प्रति समर्पित थे। **गणिकाध्यक्ष** गणिकाओं का आँकड़ा रखता था। इसकी रोजाना आय की जानकारी रखते थे और उसी के आधार पर कर लगाया जाता था। गोप जनगणना अधिकारी थे जो स्थानिक के नियंत्रण में कार्य करता था। गाँव परिवार का लेखा, जोखा रखता था स्थाणिक जो गणना अधिकारी गोप का प्रमुख था जो की राजधानी के एक चौथाई हिस्से की जानकारी रखता था।

रूपदर्शक जो सिक्के की गुणवता की जाँच करता था। यूनानी स्त्रोतो के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 1/10 हिस्सा कर के रूप में लिया जाता था। राजधानी नगर में टकसाल थे जो सिक्के ढ़ालने के कार्य से जुड़े हुए थे जिसमें निजि तौर पर टकसाल में स्वर्ण और चाँदी जमा करके सिक्के ढ़लवाया जा सकता था। निजी तौर पर सिक्के ढ़लवाने पर 1/9 कांकिणी राज्य सरकार को एवज में देना होता था।

नगर के अन्तर्गत आनेवाले धर्मशालाओं में आने वाले सभी लोगों का रिपोर्ट रखना पड़ता था। जिन साधु सन्यासियों पर उन्हें

विश्वास होता था उन्हें अपने यहाँ आश्रय देने का पुरा अधिकार होता था। रात को नौ बजे से तीन बजे तक रात को निकलना प्रतिबंधित था। इस समय पुरे शहर में कर्फ्यू लगा होता था। इस दौरान अगर कोई राजमहल के आस-पास दिखता था तो उसके लिए कठोर दंड का प्रावधान था। प्रसव पीड़ा चिकित्सक आदि को छूट प्रदान किया गया था, कि वे कर्फ्यू में भी सामान्य जीवन की तरह रात में घुम सकते थे। स्त्रियों के साथ व्यभिचार के दोषी व्यक्ति के लिए दंड का प्रावधान था। कभी-कभी इसके लिए मृत्युदंड भी दिया जा सकता था।

बंधगाराध्यक्ष कारागार का प्रमुख होता था।[अपपप] अगर कोई अधिकारी कैदियों को समय से पहले छोड़ देता था तो उसकी सारी संपत्ति जब्त कर ली जाती थी। लकड़ी के बने होने के कारण शहर में दोपहर में और तीसरे पहर में आग लगाना मना था। सार्वजनिक स्थलों को साफ सुथरा रखना लोगों की जिम्मेदारी थी। गंदगी फैलाने वालों को दंडित किया जाता है। नगर के प्रधान अधिकारी को पेयजल सड़क सुरक्षा, नगर की सुरक्षा, परिवार का निरिक्षण प्रतिदिन करना पड़ता था। आवारा पशुओं की भी निगरानी की जाती थी।

मेगास्थनीज और कौटिल्य की तुलना नगर प्रशासन के संदर्भ में करते हैं तो दोनों के अधिकारियों के नामों में अंतर दिखता है जबकि कार्य में समानता दिखाई पड़ती है। जिन 24 महामात्यों की चर्चा कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में की है वे नगर के 6 समिति के कार्य से जुड़े हुए पाए जाते हैं। कौटिल्य की सीताध्यक्ष जिसे मेगास्थनीज एग्रोनोमोई कहा[पग] है जो मूलतः कृषि विकास से जुड़ा हुआ था। यहाँ अंतर यह दिखता है कि मेगास्थनीज यूनानी पैटर्न पर अधिकारियों के नाम का वर्णन करता है लेकिन कार्य में समानता दिखती है।

नगर शासन में जो अंतर दिखता है उसके कारण मेगास्थनीज द्वारा अपने इंडिका को यूनान पहुँचने के बाद लिखा गया था जिसके कारण भूलवश गलतियाँ हो सकती है। एक कारक यह भी हो सकता है कि नगर निगम, नगरपालिका, नगरपरिषद के अधिकारियों का नामाकरण अलग-अलग होता है। बड़े शहरों ओर छोटे शहरों की व्यवस्था में अंतर होता है जो वर्तमान में भी देखा जा सकता है। शायद यही कारक है कि मेगास्थनीज और कौटिल्य के अधिकारियों में कुछ असमानता दिखती है। **एरिस्टिोनोमोई** नामक अधिकारी के नामकारण पर ग्रीक प्रभाव दिखता है। नगर के प्रमुख को यूनान में **एरिस्टोनोमाई** ही कहा जाता है। यही कारण है कि मेगास्थनीज मगर प्रमुख को एरिस्तोनोमोई कहा है। मेगास्थनीज का विवरण देते हुए समिति की बात करता है वहीं कौटिल्य 27 अध्यक्षों के जरिए नगर प्रशासन के अधिकारियों को अलग-अलग नाम से कार्य सौपता है लेकिन अध्यक्ष का कार्य कमोवेश इन्ही 6 समिति से जुड़े हुए है।

मेगास्थनीज और भारतीय साहित्य में नामो में परिवर्तन का एक आधार दुभाषिय समस्या भी है क्योंकि मेगास्थनीज भारतीय भाषा नहीं जानता था। यह माना जा सकता है कि दुभाषिय समस्या के कारण कुछ संस्थागत नामों में असमानता देखा जा सकता है लेकिन अगर कार्यों के आधार पर तुलना करे तो मेगास्थनीज के द्वारा उल्लेखित अधिकारी से समानता रखते हैं।

मूल्यांकन के तौर पर यह कहा जा सकता है कि मेगास्थनीज का नगरीय प्रशासन कौटिल्य के नगरीय प्रशासन से साम्य रखता है तथा तार्किक रूप से भी सही ठहरता है। कौटिल्य के अलावा, **मुद्राराक्षस, बौद्ध, जैन ग्रंथ** तथा मौर्य और मौर्योत्तर के समकालीन ग्रन्थों से तुलना पर कई सारे तथ्य सही साबित होते हैं। वही पटना के आसपास प्राप्त होने वाले पुरातात्विक स्रोत मेगास्थनीज के नगरीय प्रशासन को पुष्ट करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[i] जे.डब्लू. मैक्रिंडल, एशियेन्ट इंडिया एज डिस्क्राइब्ड बाई मेगास्थनीज एण्ड एरियन, संस्करण अंश 22

[ii] मैक्रिंडल एशियेंट इंडिया, कलकत्ता, 1818, पृष्ठ 141-142

[iii] जे. डब्लू. मैक्रिंडल, एंशियेन्ट इंडिया एज डिस्क्राइब्ड बाई मेगास्थनीज एंड एरियन, 2000, संस्करण अंश 24, पृष्ठ 87-88

[iv] मेगास्थनीज एण्ड एरियन, 2000, पृष्ठ 68

[v] पाटलिपुत्र पुरातात्विक अवलोकन, 2008, पृष्ठ 85

[vi] प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति, 2006-07, पृष्ठ 257

[vii] नागरको नगरं चितयेत, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, प्रकरण-56

[viii] वहीं

[ix] वहीं

RRIJM 2015, All Rights Reserved